मानव समानाधिकार के सूत्रधार

अब्राहम लिंकन

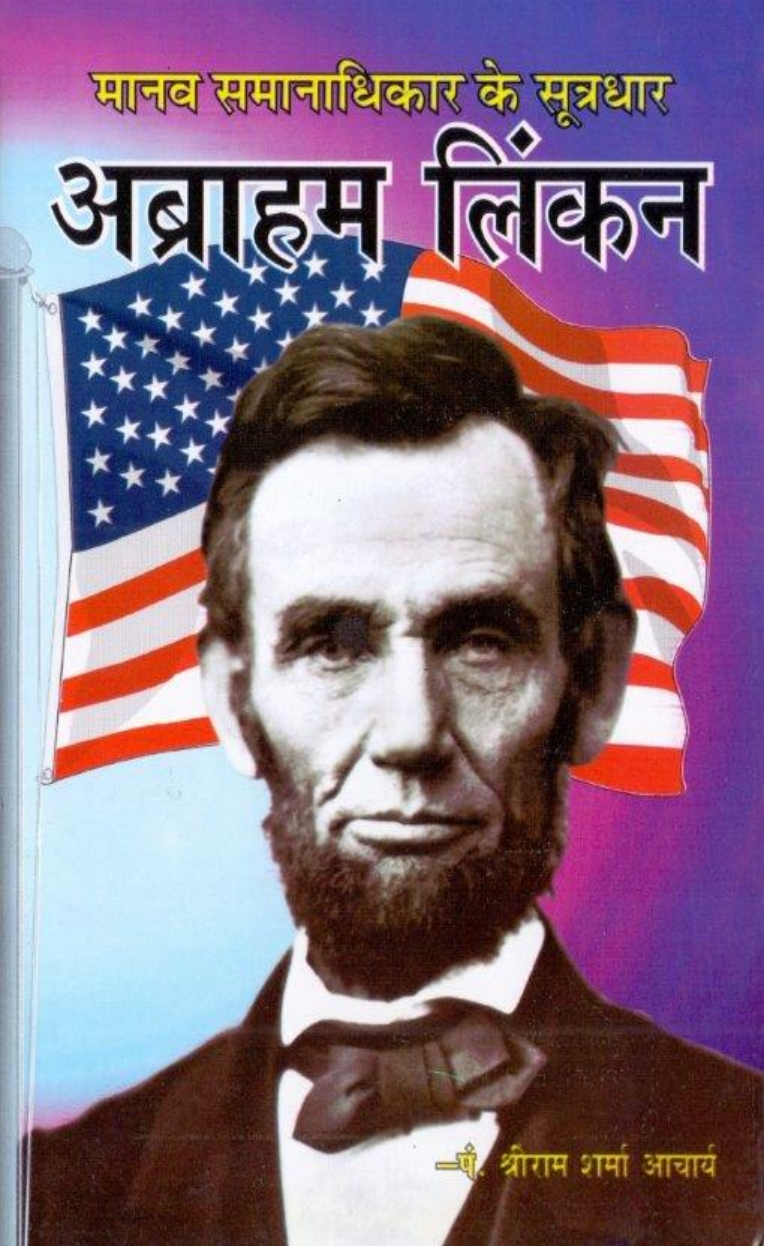

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

मानव समानाधिकार के सूत्रधार—

अब्राहम लिंकन

अमेरिका आज संसार में धन और शक्ति की दृष्टि से सर्वोपरि माना जाता है। संसार के अधिकांश राष्ट्र उसके कर्जदार हैं और सबसे अधिक सैन्य-सामग्री उसके ही पास है। पर इतनी समृद्धि और सामर्थ्य होने पर भी वहाँ सामाजिक शांति का बड़ा अभाव है। लूटमार, अपहरण, हत्या, आत्महत्या की जितनी घटनायें वहाँ होती हैं, उतनी शायद ही किसी अन्य देश में होती होंगी। सब प्रकार के साधन होते हुए भी इस तरह का अशांत, असंतुष्ट-जीवन व्यतीत करना, इस बात का चिह्न है कि वहाँ के समाज में कोई ऐसी बड़ी त्रुटि है, जिससे वे वास्तविक सुख से वंचित ही रह जाते हैं।

न मालूम वह कौन-सी अशुभ घड़ी थी, जब धन के लोभी कुछ नर-पिशाचों ने अफ्रीका के निरीह हबशियों को जबर्दस्ती पकड़कर गुलाम के रूप में अमेरिका में बेचना शुरू किया। उस समय अमेरिका की आबादी कम थी। जमीन जितनी चाहे पड़ी हुई थी, बस वहाँ के गोरों ने इन काले लोगों से पशुओं की तरह काम लेकर अपने वैभव की वृद्धि करनी आरंभ की। वे लोग हबशियों को मनुष्य नहीं समझते थे और उसके साथ कैसा भी व्यवहार कर सकते थे। हबशी दास को मार डालने पर भी कोई कानूनी प्रतिबंध न था और वास्तव में प्रति वर्ष सैकड़ों दास अधिक क्रूर प्रकृति के मालिकों द्वारा मार दिये जाते थे। हबशियों की संतान, स्त्री, बच्चे सब मालिक की अचल संपत्ति की तरह माने जाते थे और उनको पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही मालिक की दासता करनी पड़ती थी, जब तक वह स्वयं उसे किसी दूसरे के हाथ बेच न दे। अगर भीषण कष्टों को सहन न कर सकने के कारण कोई दास भाग जाता, तो जानवरों की तरह उसका पीछा और खोज की जाती थी और उसे पकड़कर पहले से अधिक यंत्रणायें दी जाती थीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसी गुलामी की अन्यायपूर्ण प्रथा ने अमरीकन लोगों के स्वभाव में अनेक ऐसे दोष उत्पन्न कर दिये, जिससे उनमें स्वार्थपरता, अनुदारता आदि दुष्प्रवृत्तियों का बाहुल्य हो गया। एक अटल सिद्धांत है कि जो व्यक्ति अधिकांश में जैसे वातावरण में रहता है, जैसा व्यापार-धंधा, रोजगार करता है, उसका स्वभाव भी तदनुकूल बन जाता है। हमने देखा है कि पुलिस के जो कर्मचारी गिरफ्तार व्यक्तियों को मारते, पीटते, गाली देते रहते हैं, वे अपने घर में भी प्रायः वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं। एक कहावत है कि "अभ्यास एक प्रकार की प्रकृति ही बन जाता है।" वेश्याओं के, दुराचारियों के पड़ोस में रहने वाला व्यक्ति यदि चरित्रहीन बन जाय और सट्टा, जुआ आदि के समीप रहने वाला जुआरी हो जाय तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। इसलिए यह उपदेश दिया गया है कि आत्म-कल्याण का अभिलाषी सदा सत्संग और आत्मोत्थान के उपयुक्त वातावरण में ही रहे।

अब्राहम लिंकन (जन्म १२ फरवरी १८०६) वह व्यक्ति था जिसने अमेरिका को इस कलंक से मुक्त करने के लिए अपने ही देशवासियों से युद्ध करने का खतरा उठाया और अंत में इसी उद्देश्य की पूर्ति में अपना बलिदान कर दिया। उनके हृदय में आरंभ से ही मानव मात्र की समता और भ्रातृभाव की भावना उत्पन्न हो गई थी और जब कभी वे किसी दास पर जुल्म होते देखते थे तो उनको दुःख होता था। उन्होंने एक हबशी लड़की को नीलाम होते देखा। खरीददार उसे चुटकी काटकर और घोड़े की तरह चला-फिरा कर देख रहे थे। इससे लिंकन का हृदय ग्लानि से भर गया। उन्होंने उपस्थित जनों से कहा—"मैं ईश्वर के नाम पर प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर कभी उपयुक्त अवसर मिला तो इस पापपूर्ण प्रथा को जड़मूल से उखाड़कर फेंक दूँगा।"

गरीबी का जीवन—

लिंकन का जन्म एक बहुत गरीब घर में हुआ था। उसका पिता बढ़ई का काम करता था। वह लकड़ी की छोटी कुटिया बनाकर उसी में परिवार सहित रहता था। उसे शिकार का भी बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शौक था और वह सोचता था कि उसका पुत्र अब्राहम भी बड़ा होकर बढ़ई और शिकारी बनेगा। गरीबी के कारण बचपन में लिंकन के पढ़ने की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी। उसे प्रायः पानी भरने, सफाई करने, चक्की पर आटा पिसाने आदि का काम करना पड़ता था। उसका शरीर लंबा और मजबूत था और सात वर्ष की आयु में ही वह काफी बड़ा दिखलाई पड़ने लग गया था। इस अवस्था में भी उसे पढ़ने का शौक था और जब कभी अवसर मिलता, किसी से दो-चार अक्षर सीख लेता था। जिस चक्की पर आटा पिसाने जाता था, उसी की मालकिन से, जब तक आटा पिसता, कुछ लिखता और गिनना सीखता रहता था।

लिंकन ने एक छोटा-सा कमजोर कुत्ता सड़क पर पड़ा पाया। उसे उस अनाथ प्राणी पर बड़ी दया आई और उसे घर ले आया। वह कुत्ता भी उसे बड़ा प्रेम करने लगा। वह चक्की तक उसके साथ जाता था। एक बार किसी लड़के ने अकारण कुत्ते को मार दिया तो लिंकन ने उस लड़के को उठाकर जमीन पर पटक दिया और उससे प्रतिज्ञा करा ली कि वह कभी इस प्रकार कुत्तों को न मारेगा।

इसी अवसर पर लिंकन के पिता ने अपने निवास स्थान को त्यागकर 'इंडियाना' स्टेट में जाकर रहने का निश्चय किया। वह प्रदेश अधिक उपजाऊ और हरा-भरा था और वहाँ शिकार के लायक जानवरों की भी बहुतायत थी। वहाँ एक जगह पसंद करके उन्होंने जंगल को साफ करके लकड़ियों के गट्ठों का एक अहाता बनाया, जिसको तीन तरफ से बंद करके चौथी तरफ खुला रखा गया था। इस तरफ सदा अग्नि जलती रहती थी, जिससे घर गरम रहता था और जंगली जानवर पास नहीं आने पाते थे। आरंभ में तो इन लोगों को शिकार करके ही जीवन-निर्वाह करना पड़ा। फिर धीरे-धीरे जंगल काटकर १६० एकड़ जमीन का पट्टा अपने नाम करा लिया और उसकी कीमत का चौथाई भाग अस्सी डालर पहली किश्त के रूप में सरकारी खजाने में जमा करा दिया।

दूसरे ही वर्ष उस नई बस्ती के निवासियों में एक प्रकार का रोग फैल गया, जिसका कारण किसी जहरीले पौधे के खाने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पशुओं के दूध का विषाक्त हो जाना था। इसके फल से अनेक लोग मर गये, जिनमें लिंकन की माँ भी थी। इससे लिंकन और उसकी छोटी बहिन बड़ी मुसीबत में पड़ गये। थोड़े दिन बाद उसका पिता ने एक अन्य विधवा स्त्री से विवाह कर लिया। इसके पहले पति से तीन बच्चे थे, जो साथ में आये। यह नई स्त्री अधिक होशियार और गृह प्रबंध में अधिक चतुर थी। उसने थोड़े ही दिन में सुव्यवस्था द्वारा उस घर से गरीबी और गंदगी को हटाकर काया पलट कर दी। वह पाँचों बच्चों को समान-रूप से प्रेम करती थी और उसने शीघ्र ही सबके स्कूल जाने की व्यवस्था कर दी।

धीरे-धीरे वहाँ अन्य लोग आकर बसते गये और कुछ समय में वहाँ एक बड़ा गाँव बस गया। अब अब्राहम काफी बड़ा, खूब मजबूत हो गया था और लोग उसे पहलवान की तरह मानने लगे थे। वह धर्मोपदेशकों तथा राजनीतिज्ञों की ऐसी बढ़िया नकल कर लेता था कि सुनने वाले हँसते-हँसते लोटपोट हो जाते थे। वह अपने समस्त कार्मों की तरफ से ऐसा लापरवाह रहता था कि लोग उसे आलसी समझने लग गये। पर वह हर तरह की पुस्तकों को पढ़ने का शौकीन था और किसी भी विषय पर बातचीत चलने पर उनके उदाहरण सुना दिया करता था।

स्वावलंबन द्वारा प्रगति

सत्रह साल की आयु में अब्राहम ने एक नाविक की नौकरी कर ली। उसे ३७ सेंट (लगभग एक रुपया) रोज मजदूरी मिलती थी, जो उस जमाने में भी कम ही थी। उसे ओहियो नदी पर तरह-तरह की नावों और स्टीमरों का रंग-बिरंगे मनुष्यों और सामग्री सहित आना-जाना एक बढ़िया दृश्य जान पड़ता था। उन्नीस साल की आयु में उसने उस कम मजदूरी वाले काम को छोड़ दिया और एक बड़े स्टीमर पर नौकर होकर अपने गाँव से लगभग एक हजार मील दूर 'न्यू ओरलीन्स' के बड़े नगर तक जाने का निश्चय किया।

'न्यू ओरलीन्स' में उसने नया ही दृश्य देखा और वह स्थान उसे बड़ा हलचलपूर्ण जान पड़ा। वहाँ उसे इतनी संपत्ति दिखाई पड़ी, जिसका कोई हिसाब नहीं। वहाँ लोग फ्रांसीसी, स्पेनिश, पोर्तुगीज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और तरह-तरह की भाषाओं में पुकार-पुकारकर, काले गुलामों से तंबाकू, चीनी आदि के बोरे जहाजों पर चढ़वाने और उतरवाने में लगे हुए थे। जब वह वहाँ से घर वापस आया तो अपनी कमाई के चौबीस डालर पिता को दे दिये।

सन् १८३० में अब्राहम का पिता इंडियाना को छोड़कर इलियानास रियासत में जाकर बस गया। कुछ समय बाद उसने स्वतंत्र होकर रहने की व्यवस्था की, क्योंकि अब वह २१ वर्ष की आयु का पूर्ण वयस्क हो गया था। वह एक बार फिर बड़ी नाव पर नौकर होकर 'न्यू ओरलीन्स' गया और वहाँ से लौटकर इलियानास में ही एक दुकान में नौकरी कर ली। यहाँ पर उसे शासन सभा के चुनाव में क्लर्क का काम करना पड़ा, जिससे राजनीति के संबंध में उसे कुछ जानकारी हो गई। सन् १८३२ में वह स्वयं स्थानीय शासन-सभा के लिए उम्मीदवार हो गया, पर उसे बुरी तरह हारना पड़ा। तब उसने 'न्यू सालेम' नामक स्थान में पोस्ट मास्टर का काम कर लिया और दो साल बाद फिर शासन-सभा के लिए उम्मीदवार बना और सबसे अधिक मत प्राप्त करके सदस्य बन गया। इसी समय उसका प्रेम 'रटलेज' नाम की युवती से हुआ, पर विवाह से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई और अब्राहम को सदैव उसका शॉक बना रहा।

अब्राहम अपने बचे हुए समय में कानून का अध्ययन करता रहता था और कुछ समय बाद उसने एक अन्य व्यक्ति के साझे में वकील का धंधा शुरू किया। पर ये दोनों ही अपने धंधे की अपेक्षा राजनीति में अधिक अनुराग रखते थे, इसलिए थोड़े ही समय में असफल होकर कार्य बंद कर देना पड़ा।

विवाह और वकालत का धंधा—

सन् १८४२ में अब्राहम का विवाह एक बड़े घर की लड़की मेरीटाड के साथ हो गया। यद्यपि वे एक दूसरे से प्रेम करते थे, पर कई प्रकार से उसकी पत्नी उपयुक्त सिद्ध नहीं हुई। वह स्वभाव से कुछ दिखावटी, ईर्ष्यालु और फिजूलखर्च थी। पर वह अपने पति की योग्यता पर पूरा विश्वास रखती थी। अनेक बातों में वह अब्राहम से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मतभेद भी रखती थी। उसके अत्यधिक सीधे-सादे रहन-सहन पर, जो अनेक समय फूहड़पन तक पहुँच जाता था, उसे बहुत डाँटती-फटकारती रहती थी। उदाहरण के लिए लिंकन वस्त्रों के टूटे बटनों की परवाह नहीं करते थे, खाते समय उनको छुरी-काँटे का ठीक प्रयोग करना नहीं आता था, वे मेहमानों का भली प्रकार अभिवादन नहीं कर पाते थे, दफ्तर में कभी सफाई नहीं होती थी आदि। उधर वह एक महत्त्वाकांक्षी स्त्री थी, जो आरंभ से ही वाशिंगटन के प्रेसीडेंट भवन (व्हाइट हाउस) में रहने के स्वप्न देखती रहती थी। यदि सच पूछा जाए तो लिंकन को हमेशा धकेलकर और पीछे पड़कर प्रेसीडेंट के पद तक पहुँचाने में उसका भी हाथ कुछ कम नहीं था। अन्यथा लिंकन जैसे सरल स्वभाव, परोपकार के व्रतधारी और रहन-सहन में सर्वथा अल्हड़ व्यक्ति का राजनीति जैसे तिकड़म और चालबाजी के क्षेत्र में आगे बढ़ सकना कठिन ही था।

लिंकन स्वभाव से ही न्याय के पक्षपाती थे। जिस समय वे अमेरिका की केंद्रीय शासन सभा (कांग्रेस) के सदस्य चुने गये, उन दिनों अमेरिका ने मेक्सिको के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा था। इसका उद्देश्य यही था कि मेक्सिको का कुछ भाग जीतकर अमेरिका में शामिल कर लिया जाए। यद्यपि मेक्सिको की सेना की संख्या ज्यादा थी, पर उसके सैनिक युद्ध-कला के अच्छे जानकार नहीं थे, जिससे अमेरिका के जनरल टेलर और हैंकाच ने शीघ्र ही उन पर विजय प्राप्त कर ली और मेक्सिको का लगभग आधा भाग उससे छीन लिया। लिंकन ने इस कार्य की 'हत्याकांड और डाकेजनी' कहकर भर्त्सना की, जिससे इलियानास रियासत के अनेक व्यक्ति, जहाँ से वे कांग्रेस के सदस्य चुने गये थे, उनके विरोधी हो गये।

ईमानदारी और सच्चाई का व्यवहार—

वकालत के धंधे में भी लिंकन इसी प्रकार की सच्चाई से काम लेता था। यद्यपि अधिकांश लोगों का यही विश्वास है कि यह पेशा 'बेईमानी' का है, जो वकील जितनी अधिक चालाकी और झूठ से काम लेगा उतनी ही सफलता उसे मिलेगी। पर लिंकन इससे ठीक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपरीत चलता था। इस संबंध में उसके जीवन-चरित्र लेखक लार्ड चार्नवुड ने लिखा है—

"लिंकन का तरीका सदा यही रहता था कि जिस मामले को उसकी आत्मा स्वीकार नहीं कर लेती, उसकी पैरवी करने से वह इनकार कर दिया करता था। अदालत में खड़े होने पर जब उसे यह मालूम होता कि इस मुकदमे में कुछ ऐसी भी बातें हैं, जो उससे छुपा ली गई हैं और जिन्हें उसकी आत्मा स्वीकार नहीं करती, तो वह उसके कागजात को उसी समय फेंक देता था।

"एक मुकदमे की सुनवाई थी। अदालत में आवाज पड़ी। लिंकन गैर हाजिर था। न्यायाधीश ने उसके होटल पर आदमी भेजा, तो उसने यह कहकर उसे लौटा दिया कि 'जज से कह देना कि अभी मैं स्नान कर रहा हूँ।' इसी तरह उसने एक और मुवक्किल से कहा—"मैं तुम्हारा मुकदमा जीत सकता हूँ—तुमको ६०० डालर दिला सकता हूँ। पर ऐसा करने से मैं एक ईमानदार परिवार को तबाह कर दूँगा। इसलिए मैं न तो तुम्हारा मुकदमा लड़ूँगा और न तुमसे कुछ फीस लूँगा। पर मैं तुमको एक सलाह बिना फीस के ही देना चाहता हूँ। घर चले जाओ और यह सोचो कि क्या ऐसे ६०० डालर तुम ईमानदारी से नहीं कमा सकते ?"

यह सच है कि इस प्रकार के व्यवहार से अधिक आमदनी नहीं की जा सकती थी, पर इसके कारण कुछ ही समय में वह सब वकीलों में आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा। बहस में पूरी ईमानदारी और सच्चाई रखने के कारण कई न्यायाधीशों की निगाह में पूर्ण विश्वासपात्र बन गया था। चाहे कैसा गंभीर और जटिल मुकदमा क्यों न होता, यदि वह उसे सच्चा मान लेता, तो अपने तर्कों और विलक्षण बुद्धि से उसकी एक-एक बात खोलकर सामने रख देता था। एक नवयुवक ने जो वकील का धंधा करना चाहता था, पर यह सोचकर हिचक रहा था कि इस काम में थोड़ी-बहुत बेईमानी तो करनी ही पड़ती है, लिंकन से उसकी सम्मति माँगी। उसने स्पष्ट लिख दिया—"तुम्हारा वकालत के बारे में यह भ्रम गलत है, तो भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि तुम सोचते हो कि यह पेशा तुमको धूर्त और बदमाश बना देगा, तो इसमें हर्गिज हाथ नहीं डालना चाहिए।"

दास-प्रथा के विरुद्ध आंदोलन—

दास-प्रथा के दोषों और उसके उन्मूलन का विचार तो लिंकन के हृदय में किशोरावस्था से ही उत्पन्न हो गया था, पर वह किस प्रकार परिपक्व हुआ और अंत में उसने किस प्रकार अपने आदर्श के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी, इसका वर्णन भी बड़ा प्रेरणाप्रद है। बाहर से देखने वालों के लिए तो यह प्रथा स्पष्टतः अन्यायपूर्ण थी, इसलिए जहाँ तक संभव हो उतना शीघ्र इसका अंत हो जाना उचित था। पर जिस राज्य-संचालक के कंधे पर इसका भार रखा जाता, वही जान सकता था कि इसमें कितनी अधिक कठिनाइयाँ और भयंकर खतरा था। अमेरिका के दक्षिणी भाग की जिन आठ-दस रियासतों में दास-प्रथा का प्रचलन था, वहाँ के अधिकाँश व्यक्ति इसको आवश्यक और सर्वथा वैध मानते थे, क्योंकि यह कई सौ वर्षों से चलती आई थी और वे प्रदेश इसी के द्वारा संपन्न बने थे। वे इसको कायम रखने पर उतारू थे और उन्होंने धमकी दे रखी थी कि अगर वाशिंगटन के शासकों ने इसके लिए कोई प्रस्ताव पास किया, तो वे गणराज्य से पृथक् हो जायेंगे।

यह केवल धमकी ही न थी। वहाँ के निवासी बड़े कट्टर थे और जो कोई दास-प्रथा के विरुद्ध आंदोलन उठाता था, वह उसके प्राणों के ग्राहक बन जाते थे। गैरीसन ने दास-प्रथा का विरोध करने को 'लिबरेटर' पत्र निकाला, तो कई बार उसके ऊपर प्राणघातक हमला किया गया और उसके प्रेस को नष्ट करते रहे। जॉन ब्राउन ने दास-प्रथा के विरुद्ध झंडा खड़ा किया, तो उसे सहपरिवार प्राण दे देने पड़े। इतना ही नहीं, इस जमाने में भी जब प्रेसीडेंट कैनेडी ने हबशियों को समानाधिकार का कानून पास कराया, तो दक्षिणी रियासतों के एक नगर में बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के दिन दहाड़े उनकी हत्या कर दी गई।

इसलिए यद्यपि उस समय दास-प्रथा की बुराइयों को सब जान चुके थे और सभी न्यायशील व्यक्ति उसको बंद करना भी चाहते थे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर जब कभी इस समस्या पर विचार करने का अवसर आता तो वे लोग भी जो इसके विरुद्ध थे, यथासंभव-इधर-उधर चले जाते या झुकने का बहाना ढूँढने लगते थे, क्योंकि वे इस सवाल का कोई उत्तर नहीं दे पाते थे कि इससे गणराज्य जिस संकट में पड़ जायगा उसका क्या उपाय किया जाए ? गृहयुद्ध के भय से वे लोग शायद ही अंत तक दास-प्रथा के उन्मूलन का समर्थन कर पाते थे। यह लिंकन की सच्चाई और योग्यता ही थी कि वे इस गंभीर प्रश्न पर बिना किसी प्रकार की दुविधा या हिचहिचाहट के कठिन मार्ग पर चलते रहे। इलियानास, जहाँ से लिंकन चुने गये थे। यद्यपि एक पश्चिमी रियासत थी, तो भी वहाँ दास-प्रथा के समर्थकों का बाहुल्य था। पर उन्होंने कभी इसकी भी चिंता नहीं की कि दास-प्रथा के उन्मूलन के कारण उनके पड़ोसी ही उनके विरोधी हो जायेंगे, तो उनको कितनी अधिक कठिनाइयाँ सहन करनी होंगी।

लिंकन ने इस विषय पर अच्छी तरह विचार करके अपना यह मत प्रकट किया था कि—"वह अमेरिका से इसलिए प्रेम करता है कि वह उसका अपना देश है। इससे भी बढ़कर, वह उससे इस कारण प्रेम करता है कि वह स्वतंत्रता का रक्षक देश है।" इसका आशय यह था कि जिस देश ने मानवता का सही मूल्य निर्धारण किया, सच्चे लोकतंत्र की घोषणा की, उससे प्रेम करना, उसके लिए त्याग करना, हमारा कर्तव्य है।

लिंकन कहते थे कि अमेरिका को एक आत्म-सम्मानित राष्ट्र बनाने के लिए उसके संस्थापकों ने जान-बूझकर एक ऐसा संविधान बनाया है, जिसमें सामान्य मनुष्यों को अन्य देशों की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया है। जनमत का सदा एक केंद्रीय-सिद्धांत होता है और उसी से सब अन्य छोटे-बड़े विचार प्रस्फुटित होते हैं। अमेरिका में आरंभ में जनमत का ऐसा केंद्रीय सिद्धांत था—"मनुष्य की समानताएँ।" जहाँ तक गोरे लोगों का सवाल था, उस देश में स्थायी बसे हुए व्यक्तियों को यह समानता का स्तर प्राप्त हो गया था। लिंकन का कहना था कि "काले लोगों को किस न्याय के अनुसार उस स्तर से वंचित रखा जाता है ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके विरोधी आक्षेप करते थे "यदि तुम हबशी महिला को दासी के रूप में रखना नहीं चाहते, तो क्या उसे पत्नी के रूप में रखोगे ?" लिंकन उत्तर देता—"मैं इस बनावटी तर्क का बड़ा विरोध करता हूँ। मुझे हबशी महिला की किसी रूप में जरूरत नहीं है। मैं उसे अकेले ही रहने दूँगा। कई तरह से निश्चय ही वह मेरे स्तर की नहीं है। परंतु यह उसका स्वाभाविक अधिकार है कि अपनी कड़ी मेहनत के पसीने से उसने जो रोटी कमाई है, उसे वह खा सके। इस दृष्टिकोण से वह मेरे बराबर है और किसी भी मनुष्य के बराबर हो सकती है। अर्थात् जिस प्रकार दूसरे मनुष्यों को अपनी पसीने की कमाई—मेहनत का फल भोगने का अधिकार है, वैसा ही अधिकार हबशियों को भी होना चाहिए, क्योंकि वे भी मनुष्य हैं और अमेरिका के नागरिक हैं।"

लिंकन का यह सिद्धांत हम भारतवासियों के लिए भी विचारणीय है। हम भी अपने समाज के एक अंग को मानवता के अनेक अधिकारों से वंचित रखे हुए हैं। हमारे देश में भी अछूतों की कभी उससे अच्छी हालत नहीं थी जैसे हबशियों की अमेरिका में थी। वहाँ के अनेक परोपकारी महापुरुषों ने इस अन्यायपूर्ण परिस्थिति के खिलाफ जब प्रयत्न किया और उसके लिए हर तरह की हानि उठाने, कष्ट सहने और प्राण तक अर्पण करने को तैयार हो गये, तब कहीं जाकर उससे छुटकारा मिल सका। फिर भी अभी वह उद्देश्य पूरी तरह प्राप्त नहीं हो सका है, क्योंकि समानता का अधिकार हबशियों को कानूनी तौर पर ही मिला है, वहाँ की सामाजिक भावना में बहुत कम अंतर पड़ा है। यद्यपि अब वहाँ किसी हबशी को दास के रूप में बंधनयुक्त दशा में नहीं रखा जा सकता, न उसे खरीदा-बेचा जा सकता है, पर अब भी वहाँ ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो हबशियों को अपने बराबर बैठाने में इनकार करते हैं। होटल, गिर्जाघर, स्कूल, कॉलेज आदि में गोरों की तरह जा सकने का अधिकार, यद्यपि कानूनी तौर पर उनको दिया जा चुका है, पर इसको व्यावहारिक रूप से अमल में लाने में प्रायः कठिनाई आती है और अनेक जगह झगड़े होते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे यहाँ अछूत नामधारियों की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है, जैसा कि लिंकन ने कहा था। यह मनोवृत्ति राष्ट्र के उत्थान और विकास के लिए वांछनीय नहीं है, उसी प्रकार जब तक हम दूसरों के साथ न्याय करने को, उनके मानवीय अधिकार उनको देने के लिए तैयार न होंगे तब तक स्वयं भी उनके अधिकारी नहीं बन सकते। यदि किसी प्रकार हमको वे अधिकार मिल भी जायें, तो जब तक हम दूसरों के साथ अन्याययुक्त व्यवहार करना बंद नहीं करते तब तक वे सुरक्षित नहीं रह सकते। लिंकन इस तथ्य को भली प्रकार अनुभव करते थे और उन्होंने अमेरिकी शासन-सभा में स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया था कि "अमेरिका कभी भी एक राष्ट्र के रूप में नहीं टिक सकता अगर उसके आधे हिस्से में दास-प्रथा चलती रही।"

अमेरिका की इन दक्षिणी रियासतों में यह कलंकपूर्ण दास-प्रथा इतनी जड़ जमा चुकी थी कि लिंकन भी समय-समय पर उसे मिटा सकने के संबंध में हताश हो जाता था। एक बार उसने कहा—"यदि सभी दासों को मुक्त करके मैं गणराज्य को बनाये रख सकता हूँ, तो मैं ऐसा ही करूँगा और यदि मैं कुछ दासों को मुक्त कराके और दूसरों को मुक्ति नहीं दिला करके भी गणराज्य को बचा सकूँ, तो मैं वह भी करने को तैयार हूँ।" इससे प्रकट होता है कि लिंकन की अंतरात्मा दास-प्रथा के सर्वथा विरुद्ध थी और दासों पर होने वाले अन्यायों-अत्याचारों से उसे बड़ी पीड़ा अनुभव होती थी, पर देश की एकता की रक्षा के लिए वह विवश होकर कुछ झुकने को तैयार था। उसका आशय यह भी था कि दास-प्रथा का अवैध होना सिद्धांत रूप से मान लिया जाए, व्यवहार रूप में वह धीरे-धीरे समाप्त की जा सकती है।

दास-प्रथा के विरुद्ध आंदोलन करने में लिंकन को सबसे अधिक टक्कर स्टीफन डगलस से लेनी पड़ी, जो कई वर्ष तक उसका प्रतिद्वंद्वी बना रहा और उसके निर्वाचन क्षेत्र में हर जगह उसका विरोध करता रहा। डगलस का कहना था कि "दक्षिण रियासतों का अधिकार है कि वे यदि दास-प्रथा को उचित समझती हैं, तो उसे अपने यहाँ जारी रखेंगी।" लिंकन ने इस आधार पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसका विरोध किया कि "मानव-मात्र को स्वतंत्र रहने का अधिकार है और इसका हनन करना एक पाप कार्य है।" डगलस के साथ लिंकन का मुकाबला तीन महीने तक चलता रहा। लिंकन सीधी और सच्ची बात कहता था, जो श्रोता के हृदय को छू लेती थी। डगलस यद्यपि हल्के तर्क, सस्ती भावनाओं से काम लेता था, पर उसकी भाषण-कला ऐसी विनोदप्रिय और लुभावनी थी कि वह उसके जोर से सिद्धांतों की कमी को पूरा कर लेता था।

इन दोनों के भाषण एक स्थान से दूसरे स्थान में लगातार जारी रहे। इस भाषण-संघर्ष का वर्णन करते हुए एक लेखक ने कहा है—"लिंकन इतना गरीब था कि उसे किसी बात की सुविधा प्राप्त नहीं थी। वह एक स्थान से दूसरे स्थान की कष्टप्रद यात्रा करता था और भीड़ भरी सरायों में ठहरता था। रेलों के अधिकारी उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते थे। इसके विपरीत डगलस एक ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञ था, उसे सभी तरह की सुविधायें प्राप्त थीं। वह जब भी रेल में यात्रा करता था तो उसके लिए आरामदेह डिब्बा रहता था और अधिकारी भी उसकी सुविधा की ओर विशेष ध्यान देते थे। वैसे यह चुनाव का बुखार काफी तीव्र और उत्तेजक होता ही है। परंतु लिंकन ने, जो इस चुनाव में साधनहीन होकर भी डटकर संघर्ष किया, वह अमेरिकी राजनीति के इतिहास में निराला ही है। इससे छुटकारा पाते ही इस अज्ञात व्यक्ति को अचानक महानता मिली, परंतु वह ऐसा व्यक्ति था, जिसने अपने सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप दे देने में अत्यंत कठोर श्रम किया था।" इसमें संदेह नहीं कि दुनिया पहले ऊपरी तड़क-भड़क से प्रभावित हो जाती है और लच्छेदार बातों में बह भी जाती है, पर 'सत्य' में भी बड़ी भारी शक्ति है। वह धीरे-धीरे प्रकट होती है, पर दिखावटी अस्थायी होती है। इसलिए जो मनुष्य सार्वजनिक और निजी जीवन में सत्य का आश्रय लेता है, वह अंत में पूरी तरह सफल होता है।

सादगी में महानता का उदाहरण—

जैसा आरंभ में ही बतलाया जा चुका है कि लिंकन आरंभ से ही गरीबी में पले थे और शक्ल सूरत, पहिनावे आदि की निगाह से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत ही मामूली आदमी समझे जाते थे। इस पर भी वे अमेरिका जैसे धनप्रधान देश में उन्नति करके सर्वोच्च पद राष्ट्रपति के दर्जे तक पहुँच सके, यह एक अद्‌भुत घटना ही मानी जायगी। जिस समय वे डगलस के मुकाबले चुनाव का दौरा कर रहे थे, उस समय का वर्णन करते हुए एक दर्शक ने लिखा है—"लिंकन इतना कुरूप और बेढंगी बनावट का था कि मैंने ऐसी आकृति आज तक कभी नहीं देखी। बोलते समय वह जिस तरह की हलचल करता था, उससे उसकी आकृति और भी बेढंगी हो जाती थी। यद्यपि एक कुशल श्रोता को उसकी आवाज ठीक सुनायी देती थी, परंतु जब वह अपना भाषण आरंभ करता, उसकी कर्कश ध्वनि और ऊँची-अखरने वाली आवाज और भी आश्चर्यजनक लगती थी। परंतु उसमें एक विलक्षणता थी, जो दर्शकों को आकर्षित कर लिया करती थी और एक बार जनता का ध्यान आकर्षित हो जाने पर वे उसकी आंतरिक सरलता पर मोहित होकर चित्रवत् रह जाते थे।"

"जैसे ही वह अपने विषय में लीन हो जाता, उसकी आवाज और चालढाल परिवर्तित हो जाती थी। उसके शब्दों में गहराई झलकने लगती थी, ऐसी गहराई जिसने उसके शत्रुओं को भी लुभा लिया था। पीड़ा से भरी आँखों में चमक उत्पन्न हो जाती थी और वह कुरूप आकृति—एक महापुरुष के रूप में दिखाई पड़ने लगती थी। उन श्रोताओं में से कई ने खुले दिल से स्वीकार किया कि जब वह जन-भावना को प्रेरित करने के लिए हार्दिक अपील करता है, तो उसका प्रभाव हृदय पर तत्काल जादू का-सा पड़ता है। यद्यपि उसके भाषण, वाद-विवाद सभाओं (डिबेटिंग क्लब) में दिये जाने वालों की तरह होते थे, परंतु उनके शब्दों के पीछे उसका व्यक्तित्व झलकता था।

ऐसा ही दूसरा विवरण सन् १८६० का है, जब लिंकन को राष्ट्रपति पद के लिए चुना गया था। उसके पहले उसने न्यूयार्क के 'कूपर इंस्टीट्यूट' में भाषण दिया था। इसमें उस महानगर के सभी चेतनाशील बुद्धिजीवी मौजूद थे और उनके सामने भाषण करना अत्यंत साहस का काम था। वे लोग भी यही सुनकर इकट्ठे हुए थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि इलिनायस का एक अशिक्षित व्यक्ति बड़ा प्रभावशाली भाषण कर सकता है। इन लोगों की आशा पूर्ण तो हुई, पर दूसरे ढंग से। उसके भाषण में किसी प्रकार की विद्वता और साहित्यिक छटा तो उनको नहीं मिली, पर वह सत्य से भरा था और स्वयं वक्ता इस सच्चाई का अनुभव कर रहा था। उस सभा का विवरण लिखते हुए शोएट नामक नवयुवक ने, जो वहाँ उपस्थित था, लिंकन के व्यक्तित्व का जो वर्णन किया है, वह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। उसका कथन है—

"लिंकन सब तरह से ऐसा लगता था जैसे पश्चिमी रियासतों का रहने वाला कोई मामूली व्यक्ति हो। पहले पहल देखने पर उसमें प्रभावशाली या असर डालने वाली कोई बात दिखाई नहीं देती थी। ढीले-ढाले वस्त्र, उनके अजीब विशाल शरीर को घेरे के पीछे की ओर लटके रहते थे। उसके चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ थीं। ये झुर्रियाँ और थकान के चिह्न सूचित करते थे कि वह जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों में से गुजरा है। उसकी गड्ढों में धँसी आँखों में उदासी और बेचैनी झलक रही थी। वह जिस आरामपूर्ण ढंग से और शांति से मन मारे-सा बैठा था, उसे देखकर कभी यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि यह वही महान् व्यक्ति है, जिसे उसके देशवासियों ने निम्नस्तर से उठा कर सर्वोच्च पद पर अभिषिक्त किया है। सभा के आरंभ होने से पहले जब मेरी उससे बातें हुईं तो वह परेशान-सा लग रहा था। पर जब वह बोलने लगा तो उसका रूप ही बदल गया। उसकी आँखें चमकने लगीं, उसकी आवाज गूँजने लगी और चेहरे पर चमक पैदा हो गई जिसने मानो सारी सभा को प्रकाशमान कर दिया हो। डेढ़ घंटे तक उसने अपने श्रोताओं को मंत्र मुग्ध रखा। उसकी भाषण शैली और बोलने का तरीका बहुत ही सीधा-सादा था।"

राजनीति में सच्चाई का व्यवहार—

राजनीति क्षेत्र में दाव-पेचों की आवश्यकता होने पर भी लिंकन अपने भाषणों में सच्चाई की ओर बहुत अधिक ध्यान रखते थे और एक-एक शब्द के लिए अपने मित्रों से सलाह और विचार करते थे। १८५६ के भाषण में जब लिंकन ने यह कहा कि "संयुक्त राष्ट्र अमेरिका अर्ध-दासत्व और स्वतंत्रता के बीच जीवित नहीं रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता।" तो उसके मित्र ने बाद में कहा—"भगवान् के लिए यह हानिकारक प्रेरणा तुमको कैसे हुई कि ऐसी बात प्रकट रूप से कहो।" लिंकन ने उत्तर दिया—"मेरी आत्मा से, मैं सोचता हूँ यह ठीक है।" मित्र ने कहा—"सत्य हो या नहीं, इस समय इसके प्रचार से लाभ के स्थान में हानि की ही संभावना अधिक है।" तब लिंकन ने मंजूर किया कि वर्तमान स्थिति में वह इसको अपने भाषणों में नहीं कहेगा।

१८५८ में अपना भाषण उसने अपने दस-बारह मित्रों को पढ़कर सुनाया। उसमें दक्षिणी राज्यों के गणराज्य से अलग हो जाने की समस्या का जिक्र था। उसका यह तरीका था कि वह अपने इरादों के बारे में पहले मित्रों से बातचीत कर लिया करता था। कई बार अत्यंत विनम्रता से उनकी सलाह मान लिया करता था और कई बार उसे पूर्णतया अस्वीकार कर देता था। इस अवसर पर एक मित्र ने कहा 'यह समय से बहुत आगे है।' दूसरे ने कहा—'ऐसा कहना मूर्खतापूर्ण होगा।' लिंकन सबकी बातें सुनने के पश्चात् बोले—"मित्रों ! इस समस्या को हम बहुत समय तक टाल चुके हैं। अब समय आ गया है, इसे व्यक्त कर देना चाहिए। यदि इसके फलस्वरूप मेरी हार होती है, तो मुझे इस सत्य के साथ हार जाने दो। मुझे सत्य और न्याय के समर्थन में मृत्यु तक स्वीकार है।"

राजनीतिक जीवन में सत्य का यह व्यवहार महात्मा गांधी में भी पाया जाता था और इसी के कारण वे २५ वर्ष तक इस हलचल पूर्ण क्षेत्र में टिके रहे और अपने नाम को अमर कर गये। यद्यपि लोग राजनीति को वेश्या की उपमा देते हैं, उसमें धूर्तता, बहानेबाजी, असत्य वायदा कर देना, रंग बदल लेना आदि बातों को बुरा नहीं समझा जाता। पर ये कार्य निम्नस्तर के और तत्काल कुछ लाभ उठा देने वाले लोगों के ही माने जा सकते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वार्थ-साधन अवश्य कर लेते हैं, पर कोई बड़ा और स्थायी काम उनके बूते नहीं होता। लिंकन राजनीति में भी अपनी आत्मा के आदेश का ध्यान रखकर सच्चाई के सिद्धांत का पालन करते थे। इसके कारण यद्यपि उनको अनेक बार असफलता का मुँह देखना पड़ा, गरीबी का जीवन बिताना पड़ा, पर इसी ने उनको महामानव बना दिया। अमेरिका में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज तक जितने राष्ट्रपति हुए हैं, लिंकन सबकी अपेक्षा कम पढ़े और निर्धन थे। पर आज लगभग डेढ़ सौ वर्ष बीत जाने पर भी अमेरिका में सबसे अधिक सम्मान उन्हीं का हो रहा है। जिस तरह भारत की राजधानी में आने वाला बड़े से बड़ा विदेशी महात्मा गांधी की समाधि पर फूल चढ़ाने राजघाट जाता है, उसी प्रकार वाशिंगटन में सभी श्रेणी के लोग लिंकन की समाधि पर पहुँचते हैं। इन दोनों महामानवों में यह सत्य और आत्मशक्ति का ही प्रभाव था और यही कारण है कि मरने के बाद इन्हीं दोनों का नाम सबसे ज्यादा टिका है।

लिंकन ने न्यूयार्क में जो भाषण दिया था, उसे वहाँ के समाचार-पत्रों ने अनेक संस्करणों के साथ प्रकाशित किया। इस अवसर पर लिंकन ने अपनी जिस शक्ति का परिचय देकर बड़े-बड़े विद्वानों को प्रभावित किया, उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई। लिंकन ने अपने भाषण में एक बहुत सीधा और स्पष्ट सिद्धांत उपस्थित किया था कि 'दास-प्रथा गलत है और जो लोग उसे सही मानते हैं, उनके साथ समान स्तर पर वार्ता करना निरर्थक है।' आज हमको यह सत्य सिद्धांत समझ में आ जाता है, पर उस संकट-काल में इसे लोगों को समझा सकना, बड़ा कठिन काम था। इस बात के लिए न्यूयार्कवासियों का आभार माना गया कि उन्होंने इस सीधे सत्य को, जो सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया था, एक महान् भाषण माना।

जब राष्ट्रपति के चुनाव के लिए उसे किसी प्रकार राजी करके खड़ा किया गया, उस समय कुछ उसके समर्थकों को छोड़कर किसी ने यह विश्वास नहीं किया था कि वह व्यक्ति अपने गुणों से उसको जीत लेगा। जब उसकी रियासत के निवासियों ने यह देखा कि यह व्यक्ति बनावट से दूर और सत्य का कट्टर समर्थक है, तो वे कहने लगे कि यह सीधा-सादा भला आदमी हो सकता है, पर राष्ट्र-संचालन का कार्य सफलतापूर्वक कर सके, इसका कोई निश्चय नहीं। उस परीक्षा-काल में अधिकांश पढ़े-लिखे लोगों की उसके संबंध में यही धारणा थी। पर जब उसने अपनी दृढ़ता और निष्पक्ष नीति के द्वारा दास-प्रथा का अंत कर दिया और उसके लिए प्राण भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दे दिये, तब लोग उसकी महानता को समझने और उसकी सराहना करने लगे कि 'हम तो तभी से उससे प्रेम और श्रद्धा रखते थे, जब कि उसको देखा भी न था।" यही नियम अधिकांश महान् आत्माओं के संबंध में देखा जाता है। महापुरुषों का पूरा महत्त्व प्रायः उनके देहावसान के पश्चात् ही प्रकट होता है।

यद्यपि लिंकन का झुकाव आरंभ से ही राजनीति और सार्वजनिक जीवन की ओर हो गया था, पर उसने कभी राष्ट्रपति के पद पर पहुँचने की महत्त्वकांक्षा नहीं की। इतना ही नहीं, सन् १८५८ में जब किसी ने उसे पहली बार सुझाया कि वह राष्ट्रपति के पद के लिए नामजद किया जा सकता है, तो उसने यही उत्तर दिया कि "मैं अपने आपको इस पद के योग्य नहीं समझता।" पीछे जब राजनीतिक परिस्थितियों और मित्रों के दवाब से उसकी राय बदल गई, तो भी वह इस संघर्ष में पड़ना बहुत अच्छा नहीं समझता था। उसने एक अन्य मित्र को इस संबंध में पत्र लिखते हुए कहा था—"मैं धन के आधार पर इस संघर्ष में उतरना नहीं चाहता। क्योंकि पहली बात तो यह है कि यह प्रथा ही गलत है और दूसरी यह कि न मेरे पास पैसा है और न मैं उसे प्राप्त ही कर सकता हूँ।" वास्तव में राजनीति में धन को स्थान मिल जाने से 'प्रजातंत्र' का महत्त्व ही जाता रहा है। हमारे देश में तो हम धन के कारण प्रजातंत्र के सिद्धांतों की जो दुर्दशा देख रहे हैं, उसका वर्णन न करना ही अच्छा है। जहाँ निर्लज्जतापूर्वक वोटों की बिक्री होती हो, वहाँ चुनाव संबंधी अन्य नैतिक सिद्धांतों का रक्षा को तो प्रश्न ही नहीं उठता। यही कारण है कि हमारे यहाँ की जनता का प्रजातंत्र पर से विश्वास निरंतर घटता जा रहा है और इस युग में भी वे 'राजतंत्र' का गुणगान करने लगते हैं। हमारे देश के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को इस विषय में लिंकन के कथन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

दक्षिणी रियासतों से समझौते का प्रयत्न—

अमेरिकन राजनीति बहुत समय से दो दलों में बँटी है—एक डेमोक्रेट और दूसरा रिपब्लिकन। रिपब्लिकनों में अमेरिका का बुद्धिजीवी और प्रगतिशील वर्ग सम्मिलित है और डेमोक्रेट्स में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकांश परंपरावादी और किसान हैं। इसके सिवाय वहाँ के सार्वजनिक कार्यकर्ता उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी रियासतों के नाम पर भी अपनी विशेषता को प्रकट किया करते हैं। यद्यपि देश में प्रायः डेमोक्रेटों का बहुमत रहने से उनके हाथ में शासन-सत्ता अधिक रहती है, फिर भी जब किसी बड़े सिद्धांत के ऊपर जनमत अनेक हिस्सों में बँट जाता है, तो रिपब्लिकनों की भी प्रधानता हो जाती है। लिंकन के राष्ट्रपति बनने के अवसर पर ऐसा ही हुआ था। दास-प्रथा और गणराज्य की एकता के प्रश्न पर उत्तर और दक्षिण के डेमोक्रेटों में तीव्र मतभेद हो गया था, जिससे उनकी तरफ से एक के बजाय दो उम्मीदवार खड़े कर दिये गये। इसी आधार पर रिपब्लिकनों की जीत हो गई। यदि यह सुयोग न मिलता तो लिंकन का राष्ट्रपति चुना जाना संभव न था।

पर इस अवसर पर राष्ट्रपति का पद ग्रहण करना, लोहे के चने चबाना था और लिंकन का देश के बुद्धिमान् और अनुभवी लोगों ने इसी आधार पर समर्थन किया कि वह अपने सिद्धांतों पर पूर्णरूप से दृढ़ रहने वाला और कर्तव्यपरायण व्यक्ति हैं। दास-प्रथा के उन्मूलन के प्रश्न ने इस समय बढ़ते-बढ़ते अत्यंत गंभीर और संकटपूर्ण रूप ले लिया था और देश के सामने यह समस्या अंतिम रूप में उपस्थित हो गई थी कि वह गणराज्य की रक्षा और दास-प्रथा के उन्मूलन में से किसी एक को चुन ले। पर ये दोनों ही बातें ऐसी थीं, जिसमें से किसी को स्वीकार कर लेना, किसी भी व्यक्ति का सदैव के लिए पतन कराने वाला था। दास-प्रथा, अमेरिकन संविधान के समान अधिकार और मनुष्य मात्र के साथ पूरा न्याय वाले सिद्धांत के विरुद्ध थी और अब वह ऐसा रूप धारण कर रही थी कि अन्य रियासतों में भी उनके फैल जाने की संभावना थी। दूसरी ओर गणराज्य का विघटन भी मामूली बात न थी। जिस लोकतंत्र की स्थापना और रक्षा के लिए पूर्वजों ने प्राण दे दिये और जिसमें मानवीय अधिकारों की पवित्रता के नाम पर अनेकों होनहार व्यक्ति बलिदान हो गये, उसे खंड-खंड हो जाने देना, निर्बल और निस्तेज बनने देना भी, घोर कलंक का कारण बन जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसलिए अधिकांश लोग इस भार को कंधे पर लेते हुए भय से काँपते थे। स्वयं लिंकन भी इस भारी जिम्मेदारी और उसके खतरे को पूरी तरह समझते थे। तभी उन्होंने ११ फरवरी, १८६१ को, जब वे अपने घर से विदा ले रहे थे, रेलगाड़ी की गैलरी में खड़े होकर उपस्थितजनों को संबोधन करके कहा—

"मेरे मित्रों ! मुझे आज तुम्हें छोड़ते हुए जो दुःख हो रहा है, उसे मेरी जैसी परिस्थिति में कोई भी व्यक्त नहीं कर सकता। इस जगह और यहाँ के लोगों की मेरे ऊपर जो कृपा रही है, वही मुझे आज इस योग्य बना सकी है। यहाँ पच्चीस वर्ष तक रहा, युवावस्था से वृद्धावस्था में पहुँचा। यहीं मेरे बच्चों ने जन्म लिया, जिनमें से एक यहीं दफन भी किया गया है। मैं अब इस स्थान को छोड़ रहा हूँ। यह नहीं जानता कि कभी यहाँ लौटकर आ सकूँगा अथवा नहीं। मेरे सामने इतना बड़ा काम है, जो राष्ट्रपति वाशिंगटन के काम से भी अधिक भारी है। उस महान् पिता परमात्मा की, जिसने सदा वाशिंगटन का साथ दिया—कृपा के बिना, मैं इसमें सफल नहीं हो सकता। यदि उसकी सहायता मिल गई तो फिर असफल नहीं हो सकता। मेरा उसी नियंता पर विश्वास है, जो इस संकट में मेरे साथ है और आप लोगों के भी साथ है तथा सर्वत्र ही भले कार्यों में उपस्थित रहता है। इसी विश्वास के साथ हमको आशा करनी चाहिए कि सब कुछ अच्छा होगा। आज मैं तुमसे हृदय से विदा लेता हूँ।"

वास्तव में लिंकन ने जिस काम का भार अपने ऊपर लिया था, वह वाशिंगटन की अपेक्षा कठिन था। वाशिंगटन को बाहर वालों से संघर्ष करना था, जिसमें अमेरिका निवासी एक थे और उनकी सहायता कर रहे थे। पर लिंकन को गृह-युद्ध की समस्या का सामना करना था, जिसमें उसके ही देशवासियों का एक भाग उसका शत्रु और प्राणों का भूखा था। वाशिंगटन ने अपने काम को पूरा करने की काफी तैयारी कर ली थी, पर लिंकन को वैसा अवसर कभी प्राप्त नहीं हुआ था। वह कुछ वर्षों से राजनैतिक वक्ता का कार्य अवश्य कर रहा था, पर उसे शासन करने का मौका कभी नहीं मिला था। फिर भी उसने देश की आवश्यकता को देखकर इस महान्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिम्मेदारी को अपने ऊपर उठा लिया। एमर्सन के कथनानुसार—"नव-राष्ट्रपति लिंकन" उस तूफान को जन्म लेते देख रहा था, जिसमें उसे राष्ट्र की नौका का कर्णधार बनाया गया था।"

यद्यपि लिंकन दास-प्रथा के बहुत विरुद्ध था और उसे पवित्र मानवीय अधिकारों के लिए कलंक स्वरूप समझता था, तो भी देश की अखंडता और सरकारी कानूनों की रक्षा के लिए उसने आरंभ में हर तरह से यही प्रयत्न किया कि किसी प्रकार दक्षिणी रियासतों से समझौता हो जाय। वह यहाँ तक तैयार था कि दक्षिण वाले दास-प्रथा में कुछ संशोधन कर दें और उसे स्वयं ही धीरे-धीरे खत्म करने की योजना बनाकर तदनुसार कार्य करें। पर दक्षिण वाले बिल्कुल उलटी चाल चल रहे थे। उन्होंने जिस दिन से लिंकन के राष्ट्रपति होने की संभावना समझी, उसी दिन से अपनी रियासतों को गणराज्य से पृथक् करने की तैयारी करने लग गये थे। एक रियासत 'कारोलिना' ने ऐसी घोषणा कर भी दी थी। वे लोग इनके लिए भी प्रस्तुत हो रहे थे कि यदि केंद्रीय सरकार इसमें बाधा डाले तो उसके साथ युद्ध आरंभ कर दिया जाय। लिंकन के जीवन-चरित्र लेखक लार्ड चार्नवुड ने इस संबंध में लिखा है—

"हम यह प्रश्न करें कि दक्षिण से युद्ध क्यों लड़ा गया ? इसका उत्तर यह है कि दक्षिण के नेता और दक्षिणी लोगों के बहुमत के समक्ष एक सर्वोच्च सर्वव्यापी लक्ष्य था 'दास-प्रथा को चिरस्थायी बनाना और आवश्यकता हो तो उसका विस्तार करना।' इन लोगों ने ऐसे व्यक्तियों को भी अपने में सम्मिलित कर लिया था, जो दास-प्रथा के तो विरोधी थे, पर इस सिद्धांत को मानते थे कि प्रत्येक राज्य (प्रांत) को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह चाहे गणराज्य में रहे और चाहे उससे बाहर हो जाए। इसलिए युद्ध का वास्तविक कारण यही था कि उत्तरी भाग की जनता के विशाल बहुमत ने दक्षिण वालों का यह दावा अस्वीकार कर दिया कि दास-प्रथा में वृद्धि की जाए—उसका विस्तार किया जाए। साथ ही उन्होंने इस सिद्धांत को मानने से इनकार कर दिया कि दक्षिण वाले गणराज्य से पृथक् होकर उसे हानि पहुँचाने के लिए स्वतंत्र हो जाएँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्भाग्यवश आज हम अपने भारत देश में भी कुछ अंशों में वही दृश्य देख रहे हैं, जो उस समय अमेरिका में दिखाई पड़ रहा था। हमारे यहाँ भी प्रांतवाद तरह-तरह की कठिनाइयाँ उत्पन्न कर रहा है और लोग अपनी-अपनी भाषा के नाम पर पृथकता—फूट की भावनाओं को बढ़ावा दे रहे हैं। एकाध प्रांत ऐसा भी है (और संयोगवश यहाँ भी वह दक्षिणी प्रांत ही है) जहाँ कभी-कभी भारतीय संघ-शासन से पृथक् होने की आवाज भी सुनाई पड़ती है। पर अमेरिका के अनुभव और उदाहरण से हम कह सकते हैं कि किसी भी 'देश-भक्त' और 'भारतीय' नामधारी के लिए यह अनुचित है कि वह भारतीय अखंडता पर आघात करे अथवा उसे निर्बल बनावे। एक तो भारत के विरोधियों ने पहले ही दुरभिसंधि करके उसे दो भागों में विभाजित कर दिया है, जिसका दुष्परिणाम हम निरंतर अशांति के रूप में भोग रहे हैं। पर वह तो ऐसी बात थी कि लगभग हमारी शक्ति से बाहर थी और उस समय एक दृष्टि से 'भारतीय राष्ट्र' का अस्तित्व ही न था। पर अब जिस राष्ट्र का निर्माण हमारे आत्म-बलिदानी नेताओं ने किया है, उसके विपरीत आचरण करना, उसे जान-बूझकर हानि पहुँचाने का कोई प्रयत्न करना एक अक्षम्य अपराध ही है, जिससे बचने का निश्चय हम सबको कर लेना चाहिए।

लिंकन ने अंतिम क्षण तक यह कोशिश की कि दक्षिण वालों के साथ संघर्ष न किया जाय और दास-प्रथा के प्रश्न को अभी जैसा का तैसा छोड़ दिया जाए, क्योंकि उस समय के अधिकांश अमेरिकन राजनीतिज्ञ और शासन-संचालक दास-प्रथा के प्रश्न को इतना महत्त्व नहीं देते थे कि उसके लिए आपस में युद्ध करके संपूर्ण राष्ट्र की प्रगति को खतरे में डाला जाए। लिंकन भी अपने साथियों की सम्मति के विरुद्ध कुछ करना उचित नहीं समझते थे और उनसे उस समय एक मित्र को पत्र लिखते हुए वह बात स्पष्ट कर दी थी कि "दक्षिण के भले आदमियों के संबंध में मुझे कोई शिकायत नहीं है। उनके सामने मैं सैकड़ों बार यह कह सकता हूँ कि हम दास-प्रथा में, (जहाँ तक उसका रूप एक घरेलू मामले की तरह है) हस्तक्षेप नहीं करेंगे, परंतु मेरा पाला दक्षिण और उत्तर के भी ऐसे बुरे व्यक्तियों से पड़ा है, जो चाहते हैं कि कोई नयी चीज पैदा करके उससे नया जाल फैला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दें। ये ऐसे आदमी हैं, जो मुझे धमकाना चाहते हैं या कम से कम मुझ पर यह लांछन लगाना चाहते हैं कि मैं कायर या डरपोक हूँ।"

फिर भी लिंकन ने अपनी तरफ से समझौते में कभी बाधा डालने की कोशिश नहीं की और उसने शासन-सभा के अन्य सदस्यों को इस बात का पूरा मौका दिया कि वे समस्या का कोई ठीक हल निकालकर समझौते का मार्ग प्रशस्त करें। इसके लिए सीनेट के तेरह सदस्यों की एक कमेटी बना दी गई, जो कई महीनों तक परिश्रम करती रही। पर जब दक्षिणी नेता उग्ररूप धारण करते रहे तो लिंकन ने यह सम्मति दी कि "यदि हम लोग इस मसले पर बहुत अधिक झुकेंगे तो तो दास-प्रथा का, उसकी वृद्धि का आंदोलन पूरे वेग से फट पड़ेगा और पड़ौसी राज्यों पर छा जाायेगा। इस दशा में अब तक हमने इस प्रथा को मिटाने के लिए जितने भी प्रयत्न किये हैं, वे सब निरर्थक हो जायेंगे।"

४ मार्च १८६१ को लिंकन ने राष्ट्रपति के पद की शपथ ली। इसमें अन्य बातों के सिवाय गृहयुद्ध का भी जिक्र था और लिंकन ने अपनी नीति स्पष्ट कर दी थी। उसने कहा—"जो अधिकार मुझे सौंपे गये हैं, उनका प्रयोग सरकारी संपत्ति व सरकारी स्थानों को प्राप्त करने, उन्हें बनाये रखने और कब्जे में रखने के लिए किया जायेगा। इसके साथ ही आयात कर की वसूली की जायेगी। इससे आगे बढ़कर इस दिशा में सरकार आक्रमण नहीं करेगी। किसी भी स्थान पर कहीं भी जनता के विरुद्ध, शक्ति का प्रयोग नहीं किया जायगा।"

आगे चलकर उसने गणराज्य की अखंडता पर जोर दिया और बतलाया कि चाहे गृहयुद्ध अधिक उग्र और लंबा रूप धारण कर ले, पर विभिन्न राज्यों की जनता में जो गहरे संबंध है, वे टूट नहीं सकते। इसलिए अंत में हमारा पारिवारिक संबंध फिर से स्थापित होगा ही। उसने कहा—"मेरे असंतुष्ट देशवासियों ! गृहयुद्ध का निर्णय मेरे हाथों में नहीं, वरन् तुम्हारे हाथों में है। सरकार तुम पर आक्रमण नहीं करेगी। "यदि तुम स्वयं पहले आक्रमण नहीं करोगे, तो तुम पर संकट आने का सवाल नहीं है। हम लोग शत्रु नहीं, वरन्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मित्र हैं। भले ही हमारी भावनाओं में तनाव पैदा हो जाय, पर इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे संबंध ही टूट जायेंगे।"

सिद्धांतों की रक्षा करते हुए एकता को स्थिर रखना प्रत्येक देश-हितैषी का कर्तव्य है। ऐसा सुधार कैसे प्रशंसनीय कहा जा सकता है, जिसमें मूल वस्तु ही खत्म हो जाय। लिंकन ने देश की अखंडता की विघटनकारी शक्तियों का विरोध अवश्य किया, पर उसने अपने व्यवहार में कटुता या बदले की ऐसी भावना कभी नहीं आने दी, जिससे दोनों पक्षों का मनोमालिन्य चिरस्थायी हो जाय।

युद्ध की आग बढ़ने लगी—

अंत में दक्षिणी राज्यों ने गणराज्य के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करके युद्ध आरंभ कर ही दिया। लिंकन ने जिस दिन राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की, उसके दूसरे ही दिन दक्षिण के 'सम्टर' किले के सेनाध्यक्ष मेजर अंडरसन ने यही संदेश भेजा कि, अगर उसे सामग्री और सैनिक शीघ्र ही प्राप्त नहीं हुए, तो वह कुछ ही सप्ताह किले पर अधिकार कायम रख सकेगा। इधर केंद्रीय सरकार के सैनिक सलाहकार जनरल स्काट ने यह मत प्रदर्शित किया कि 'सम्टर' किले की रक्षा के लिए बीस हजार सैनिकों की आवश्यकता पड़ेगी, जिनकी इस समय व्यवस्था की जानी संभव नहीं। युद्ध की सभी समस्यायें ऐसी ही पेचीदा थीं, जिनसे लिंकन की परेशानी बढ़ने लग गई। यह कोई विदेशी शत्रु से लड़ने का मामला न था, पर घरेलू झगड़ा था, जिसमें कहीं भी एक मत दिखाई नहीं देता था। कांग्रेस और सीनेट के सदस्यों, सरकारी कर्मचारियों तथा सैनिक अधिकारियों में सर्वत्र मतभेद दिखाई पड़ता था। कोई-कोई दक्षिण वालों के स्वतंत्र होने को ठीक बतलाता था और कोई इसके लिए उनकी भर्त्सना करता था। विदेशों की सरकारें भी जो अमेरिका से मनोमालिन्य का भाव रखती थी, इस झगड़े को भड़काना चाहती थीं। स्वयं अमेरिका के सेनाध्यक्षों ने, जिनको लिंकन ने दक्षिण के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई का आदेश दिया, उसे मानने में टालमटोल की और एकाध ने उसी समय नौकरी भी छोड़ दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस तरह राष्ट्रपति का पद संभालते ही लिंकन के सामने एक बड़ी गंभीर समस्या उपस्थित हो गई। सभी जानकार राजनीतिज्ञ इन कठिनाइयों को पहले से समझते थे, इसलिए देश के सर्वोच्च पद का प्रलोभन होते हुए भी कोई जल्दी से आगे नहीं बढ़ा था। लिंकन भी इस तथ्य को समझता था। पर वह बहुत पहले दासों की दुर्दशा से द्रवित होकर उनके उद्धार की प्रतिज्ञा कर चुका था और इस समय अपने देश की अखंडता को बनाये रखने की भी उसको चिंता थी, इसलिए उसने कर्तव्यपालन की दृष्टि से इस 'काँटों के ताज' को पहन लिया था।

अमेरिका में उस समय अधिक संख्या में तैयार सेना रखने का प्रचलन न था। इसलिए जब युद्ध छिड़ गया, उस समय केंद्रीय सरकार के पास कुल सोलह हजार सेना थी। पर दक्षिण ने उसी समय दो-तीन लाख सेना भरती कर ली थीं। इसलिए लिंकन ने भी फौजी स्वयंसेवकों की माँग की और कुछ ही समय में तीन लाख के करीब व्यक्ति सेना में सम्मिलित हो गये। पर लिंकन के पास योग्य सेनापतियों का अभाव था। उस समय जनरल राबर्ट ली वाशिंगटन में था और वह सेना का कुशल संचालक था। पर जब उससे गणराज्य की सेनाओं का नेतृत्व करने कहा गया, तो उसने इनकार कर दिया और वह अपने निवास स्थान 'वरजीनिया' जाकर वहाँ की सेना का संचालक बन गया। यही हाल जैक्सन नामक दूसरे सेनापति ने भी किया और वह भी जाकर 'ली' से मिल गया।

ऐसी दशा में लिंकन का परेशान होना स्वाभाविक था। वह स्वयं भी सेना के मामलों में अनजान था, इसलिए इस कार्य में ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था। उसे कई सेनापति बदलने पड़े। अंत में उसने स्वयं ही ढूँढ़कर सेनापति ग्रांट को निकाला, जिसने सेना में उत्साह भरकर थोड़े ही समय में दक्षिण की सेना को अनेक स्थानों पर परास्त कर दिया। लोगों ने अनेक बार ग्रांट की शिकायतें लिंकन से कीं और उन पर दोषारोपण भी किये, पर वह मनुष्यों को पहिचानता था। इसलिए उसने राह चलते लोगों की सम्मति पर कभी ध्यान नहीं दिया और वह ग्रांट को प्रोत्साहन और सहायता देता रहा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस बीच २२ सितंबर १८६२ को लिंकन ने एक ऐसा कदम उठाया, जिससे घर और बाहर के सब लोग चौंक पड़े और उसकी सबसे बड़ी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई, उसने एक ऐसे घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किये, जिसके मुख्य शब्द थे—

"सन् १८६३ की प्रथम जनवरी के दिन वे सभी दास, जो किसी भी राज्य में अथवा ऐसे किसी भी राज्य के भूमि में, जो उस समय संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विद्रोही हों, इसी समय तथा इसके बाद सदा के लिए स्वतंत्र रहेंगे।"

लिंकन का यह कार्य ऐसा सूझ-बूझ का और समयोचित था कि इसने आगे चलकर युद्ध का नक्शा ही बदल दिया और गणराज्य की सेनाओं को बहुत बड़ी सहायता मिल गई। साधारण समय में तो अमेरिका के राष्ट्रपति को तो क्या, वहाँ की केंद्रीय शासन सभा (कांग्रेस) को भी यह सत्ता प्राप्त न थी कि वह एक भी दास को स्वतंत्र कर सकें। पर अब युद्ध की परिस्थिति में लिंकन ने सेनाओं के सर्वोच्च अधिकारी की हैसियत से युद्ध-कार्य के रूप में इस आदेश को जारी कर दिया। इसका कानूनी रूप यह था कि जिस तरह विद्रोहियों के घोड़े, गाड़ियाँ आदि छीन ली गई, उसी तरह उनकी एक बड़ी संपत्ति और साधन-सामग्री 'दास' भी छीन लिए गये। लिंकन का कहना था कि यह राजाज्ञा इसलिए कानून के अनुसार है, क्योंकि इसमें हमारी सेना को प्रत्यक्ष रूप से मदद मिलती है और वास्तव में इसका परिणाम ऐसा ही हुआ। इसके फल से दक्षिणी राज्यों के आवश्यक उद्योग-धंधों में से एक बहुत बड़ी श्रमशक्ति निकल गई और युद्ध का अंत होते-होते एक-लाख अस्सी हजार हबशी सैनिकों ने गणराज्य के पक्ष में हथियार उठा लिए। उनका मुख्य उपयोग यह किया गया कि जिन जीते हुए स्थानों में गोरी फौजें सुरक्षा के लिए तैनात नहीं की जा सकती थीं, वहाँ इन हबशी सैनिकों को रख दिया गया। लिंकन के कथनानुसार यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कार्य था, जिसके बिना युद्ध कभी समाप्त ही नहीं हो सकता था।

यद्यपि इस कदम को लिंकन ने युद्ध की आवश्यकतावश ही उठाया था, पर एक बार कानूनी रूप पा लेने के पश्चात् इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिणाम यह निकला कि चाहे गणराज्य कैसी भी परिस्थिति में पड़ जाता और लिंकन की जगह कोई दूसरा भी राष्ट्रपति बन जाता, तो भी, जब कभी किसी अदालत को इस प्रश्न की जाँच करनी पड़ती तो वह यही फैसला करती कि जिन दासों ने इस घोषणा के अनुसार वास्तव में स्वतंत्रता पा ली, वे कानून की दृष्टि से स्वतंत्र हैं।

गरीबों से बंधुभाव—

राष्ट्रपति के पद पर पहुँच जाने पर भी लिंकन वैसा ही सीधा-सादा और अहंकारशून्य बना रहा। वह चाहे जब वाशिंगटन नगर की सड़कों पर निकलता रहता था। उस समय का वर्णन करते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध कवि 'वाल्ट ह्विटमैन' ने लिखा है—लिंकन के सहायक इस बात पर जोर देते थे कि जब वह शहर में निकले तो उसके साथ के घुड़सवार अंगरक्षक ठाट से सजे-धजे रहने चाहिए। पर मैंने देखा कि इस जलूस की वेषभूषा और प्रदर्शन अधिक दर्शनीय नहीं होता था। लिंकन अच्छे डीलडौल वाले सफेद घोड़े पर चढ़ता था, सादे कपड़े पहनता था, जो कुछ मैले भी रहते थे। वह बिल्कुल सामान्य व्यक्ति जान पड़ता था। उनके अंगरक्षक भी बिल्कुल सज्जाहीन होते थे। उनको देखकर किसी तरह की शान की कल्पना नहीं होती थी। मुझे लिंकन का गहरा ताम्रवर्णी चेहरा बिल्कुल स्पष्ट दिखाई पड़ता था। उसमें पड़ी गहरी झुर्रियाँ, गढ़े में धँसी आँखों में गहन चिंतन और विषाद का भाव मेरे सामने आ जाता था। मार्ग में मिलने पर हम एक दूसरे के प्रति मैत्री-भाव से नमस्कार कर लेते थे कभी-कभी वह एक खुली बग्घी (गाड़ी) में आता-जाता था। वह भी कुछ शान-शौकत की नहीं होती थी। एक बार वे मेरे बहुत नजदीक से निकला। जब उसकी गाड़ी धीरे-धीरे जा रही थी, तो मैंने उसके चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा। उसकी दृष्टि मुझसे टकरा गई तथा उसने झुककर नमस्कार किया और मुस्कराया। परंतु मैंने उसकी मुस्कराहट की गहराई में छपा हुआ वही पीड़ा का भाव देखा, जिसे मैं पहले बता चुका हूँ।"

लिंकन के साथ उसका दस वर्षीय पुत्र टामस भी प्रायः रहता था। कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। उससे बड़ा लड़का उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय हारवर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ता था। तीसरा बिली एक प्यारा होनहार चपल बच्चा था, जो सन् १८६२ में बारह वर्ष की आयु में मर गया। एक बच्चा बचपन में इलिनायस में ही मर गया था। लिंकन के यही चार संतानें हुई थीं, जिनमें से तीन बाल्यावस्था में ही मर गईं। दो की मृत्यु तो राष्ट्रपति भवन में हुई। यद्यपि वह एक सहृदय और प्रेमी पिता था, तो भी राजनीतिक कार्यों में वह इतना अधिक संलग्न रहता था कि उसकी देखभाल में बहुत कम ध्यान दे पाता था। इसी से उसकी स्त्री प्रायः उससे असंतुष्ट रहती थी और कहा करती थी कि देश और समाज के कामों के आगे वह अपने गृहस्थी संबंधी कर्त्तव्यों पर कुछ ध्यान ही नहीं देता। उसके अंतिम समय में स्त्री से उसका यह मतभेद और तनाव बहुत अधिक बढ़ गया था।

नियमित मेहमानों के अतिरिक्त आगंतुकों का भी एक ताँता उसके यहाँ लगा रहता था। राष्ट्रपति बनने के कुछ समय बाद तक तो हजारों ऐसे व्यक्ति, जिनसे पूर्व जीवन में उसका कम या ज्यादा परिचय हो चुका था, नौकरी, पदवी या किसी प्रकार की सरकारी सहायता प्राप्त करने की भीड़ लगाये रहते थे। कुछ लोग उसके गुणों और सेवाओं से आकर्षित होकर केवल अपना भक्तिभाव प्रकट करने उनके पास जाते थे। उसके पास ऐसे किसान और दूर के देहाती लोग आते, जिनसे वह बहुत अच्छी तरह बातें करता और उनके लिए उसे उचित से अधिक समय देना पड़ता। लिंकन से मिलकर अधिकांश लोग यही भावना लेकर जाते कि वह गरीबों की बहुत अधिक कृतज्ञता मानता है और सदा उनकी बात ध्यान देकर सुनता है। इस गुण के कारण वह अपने देशवासियों पर सदैव प्रभाव डालता रहा।

लिंकन जितने दिन राष्ट्रपति रहा, उन दिनों बराबर युद्ध की दशा बनी रही। इसलिए उसका एक नियमित काम यह भी था कि अमेरिकन सेना में विभिन्न अपराधों के लिए सजा पाने वाले लोगों के क्षमा-प्रार्थना-पत्रों पर विचार करें। अमेरिकी सेना के अधिकांश सैनिक स्वयं सेवक अथवा अनिवार्य भर्ती के कानून के अनुसार फौज में शामिल होने वाले थे। वे फौजी अनुशासन अथवा नियम-बंधन के अधिक आदी नहीं थे। सैनिक अदालतों द्वारा भगोड़ों,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहरे के समय सो जाने वालों या अन्य प्रकार की लापरवाही करने वालों को मौत की सजायें दी जाती थीं। इनमें से कितने ही राष्ट्रपति के पास क्षमा का प्रार्थना-पत्र भेजते, जिन पर वह सप्ताह में एक दिन विचार करता था। उसे लिंकन सबसे मनहूस दिन कहता था। अपराधी के माता-पिता या मित्र लगातार लिंकन से अपील करते रहते। एक समय तो ऐसा था, जब वह क्षमा के लिए बहुत अधिक तैयार रहता था। वह कहता था—"तुम नहीं जानते कि एक मनुष्य को मर जाने देना कितना कठोर है, जबकि यह संभव हो कि तुम्हारी कलम की लिखावट से उसकी जान बच सकती है।" उसका एक सेनापति बटलर उसे लिखा करता था कि इस प्रकार दया दिखाकर वह सेना की अनुशासनबद्धता को बिगाड़ रहा है।

पर लिंकन ने अपने इस दयालु स्वभाव को नहीं छोड़ा। अनेक समय तो कांग्रेस का कोई सदस्य आधी रात को जबर्दस्ती उसके सोने के कमरे में घुस जाता और उसे जगाकर किसी अपराधी के पक्ष में नये प्रमाण रखकर कहता कि इन पर तो विचार ही नहीं किया गया। लिंकन इससे असंतुष्ट नहीं होता और उसी समय निर्णय कर देता—"अच्छा ! मैं नहीं समझता कि उसे गोली मारने से कोई लाभ होगा।"

इस संबंध में बारमौंट के एक किसान के लड़के की कहानी बहुत प्रसिद्ध है, जिसे बाद के लेखकों ने बहुत कुछ तोड़-मरोड़ डाला है। वह युवक बहुत दूर से पैदल चलकर आया था और अपना पहरा देने के पश्चात् अपने एक बीमार साथी के बदले भी पहरा देने को तैयार हो गया। पर अत्यंत थकावट के कारण उसे नींद आ गई। जब वह पहरे के स्थान पर किसी बड़े अधिकारी द्वारा सोता हुआ पकड़ा गया तो उसे मौत की सजा दी गई। उसी दिन लिंकन उस छावनी में निरीक्षण करने आया था। उस विषय में सुनकर वह उससे मिला। उसने उसके घर का सारा हाल सुनकर उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—"मेरे बच्चे तुमको गोली नहीं मारी जायेगी। तुम्हारी यह बात कि तुम अत्यंत थकावट के कारण जागते नहीं रह सके, मान ली जायगी ! मैं तुम पर भरोसा करके तुमको फिर सैनिकों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़ने के लिए भेज रहा हूँ। पर तुम्हारे कारण मुझे काफी तकलीफ हुई है। अब तुम मुझे यह बताओ कि मेरा यह कर्ज कैसे चुकाओगे ?'' इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिन बाद वह गणराज्य की तरफ से बड़ी वीरता के साथ लड़ता हुआ मारा गया और अंत तक लिंकन को स्मरण करता रहा।

राष्ट्रपति के पद पर लिंकन का पुनर्निर्वाचन—

उत्तरी और दक्षिणी रियासतों का युद्ध काफी लंबा चला और लिंकन के राष्ट्रपति के पद पर रहने के पूरे चार वर्ष इसी में व्यतीत हो गये। इस बीच में लिंकन ने अपनी पूरी शक्ति एक महान् संकल्प को सफल बनाने में लगा दी। इसके लिए उसने अपने स्वास्थ्य, सांसारिक-वैभव, पारिवारिक सुख, कीर्ति आदि सब कुछ को बाजी पर लगा दिया। फिर भी सन् १८६४ के मध्य तक उत्तर की सेनायें दक्षिण के विद्रोहियों को दबाने में अधिक अग्रसर न हो सकीं। यद्यपि इतने लंबे संघर्ष के पश्चात् उनकी अंतिम विजय का लोगों को विश्वास हो गया, पर युद्ध के लगातार बढ़ते जाने और उसके लिए हर तरह बलिदान करते रहने से जनता थक चुकी थी और अब वह शांति के लिए बेचैन होने लग गई थी। इसलिए सन् १८६४ में जब राष्ट्रपति के निर्वाचन का समय समीप आया, तो राजनीति में भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्ति इस बात की जोरों से चर्चा करने लगे कि आगामी बार किसको इस पद पर चुना जाय ? जैसा कहा जा चुका है, लिंकन 'रिपब्लिकन दल' की ओर से चुना गया था, अमेरिका में अब भी डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रभाव था। आगामी चुनाव के लिए उसने मैक्नील को उम्मीदवार बनाया। मैक्नील एक वीर सैन्य-संचालक था और राजनीति में भी चतुर था। इसलिए डेमोक्रेटों को उसकी सफलता की पर्याप्त आशा थी।

उधर रिपब्लिकन दल में निराशा और मतभेद की भावना बढ़ रही थी। डेमोक्रेटों के मुकाबले में वे अपने को कमजोर तो मानते ही थे, अब युद्ध में प्रत्यक्ष सफलता प्राप्त न हो सकने के कारण और भी अनिश्चित अवस्था में थे। उनमें से थोड़े ही लिंकन को दुबारा राष्ट्रपति बनाने के पक्ष में थे, शेष लोग भीतर ही भीतर किसी अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उम्मीदवार को खड़ा करने की चाल चल रहे थे। उन्होंने विशेष रूप से जनरल ग्रांट की, जो उत्तर की सेनाओं का प्रधान अधिकारी था और जिसने अभी तक दक्षिणी सेनाओं को अनेक युद्धों में हराकर आगे बढ़ने से रोका था, राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने का प्रस्ताव किया। पर जनरल ग्रांट सच्चा देशभक्त था और वह जानता था कि अभी उसका स्थान युद्ध-क्षेत्र में ही है, ताकि दक्षिण के विद्रोहियों के मनसूबों को पूरी तरह से खत्म किया जा सके। इसके अतिरिक्त वह यह भी जानता था कि उसको इस महत्त्वपूर्ण पद पर लाने वाला तथा निरंतर उसका समर्थन करने वाला भी लिंकन ही था। इसलिए जब किसी परिचित ने उससे राष्ट्रपति के पद वाले-प्रस्ताव पर विचार करने को कहा, तो वह अकस्मात् कुर्सी के हत्थे पर बड़े जोर से घूँसा मारते हुए बोल उठा—"यह हर्गिज नहीं हो सकता, वे लोग मुझे इसके लिए कभी तैयार नहीं कर सकते।"

लिंकन भी इन सब बातों को जानता था। पर उसे राष्ट्रपति पद के प्रति किसी प्रकार स्वार्थजनित मोह नहीं था, वरन् उसका एकमात्र उद्देश्य पापरूप गुलामी की प्रथा का मूलोच्छेद करना था और साथ ही देश के गणराज्य शासन प्रणाली की रक्षा करना था। इसके लिए वह बड़े से बड़ा खतरा उठाने को तैयार था। जब १८६४ के मध्य में शासन सभा की युद्ध संबंधी 'संयुक्त समिति' ने, जिसके प्रधान नेता लिंकन के विरोधी थे, यह प्रस्ताव पास करा लिया कि "अमेरिका की कोई भी रियासत अपनी ही योजना के अनुसार अपना निर्माण कर सकती है' तो उसने केवल अपनी जिम्मेदरी पर उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया और कहा—"कुछ भी हो, मुझे जो बात सत्य जान पड़ती है, मैं उससे अधिक दूर नहीं हट सकता। मैं अपने कुछ मानदंड, कुछ सिद्धांत तो बनाये रखूँगा।"

अनेक लोगों ने होने वाले रक्तपात से घबड़ाकर बार-बार दक्षिण वालों से संधि कर लेने पर जोर दिया और एक पत्र-संपादक ने इस संबंध में लिंकन के विरुद्ध जोरों से प्रहार करते हुए उसे 'जिद्दी रक्त-पिपासु' लिख मारा। लिंकन जैसे सहृदय तथा दयालु प्रकृति के व्यक्ति पर यह बहुत ही नीचतापूर्ण आक्षेप था, तो भी उसने उसे सहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर लिया और संधि का प्रस्ताव करने वालों से कहा कि, वे स्वयं अपनी तरफ से दक्षिणी रियासतों के नेता जेफरसन डेविस से संधि की बात करके राजी करें। उन लोगों ने दो बार अपने दूत दक्षिण वालों के पास भेजे, पर हर बार जेफरसन ने यही उत्तर दिया कि 'दक्षिण या तो स्वतंत्र (पृथक्) होकर रहेगा या नष्ट जायेगा।'' इस प्रकार लिंकन ने अपनी दूरदर्शिता से बिना किसी तरह का विवाद बढ़ाये उन लोगों का मुँह बंद कर दिया, जो यह प्रचार करते फिरते थे कि "दक्षिण वाले समझौते को तैयार हैं, परंतु लिंकन ही इसके लिए राजी नहीं होता।''

इस प्रकार अपनी स्थिति को जनता तथा राजनीतिज्ञों के समक्ष स्पष्ट करके अब्राहम लिंकन ने ६ दिसंबर, १८६४ को शासन-सभा के सामने अपने राष्ट्रपतिकालीन अंतिम संदेश में कह दिया—'राजनीतिज्ञों ने अपने स्वाभाविक ज्ञान से प्रकट कर दिया है कि जनता में इस प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं है कि 'गणराज्य' निश्चित रूप से स्थिर रहे। उपलब्ध प्रमाणों पर ध्यान देकर विचार करने पर मुझे यह जँचता है कि विद्रोहियों के नेता से संधि की बात की चर्चा करने से कोई लाभ नहीं हो सकता, क्योंकि वह 'गणराज्य' को भंग करने के निश्चय पर अडिग बने हैं। पर हम लोग ऐसा कभी नहीं होने देंगे। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका हल युद्ध में पूर्ण विजय प्राप्त करके ही निकल सकता है। हमारी सरकार युद्ध को एक ही अनिवार्य शर्त पर रोक सकती है कि विद्रोही लोग राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध उठाये हथियारों को डाल दें।''

लिंकन ने संधि-चर्चा की बात से कभी इनकार नहीं किया, क्योंकि वह आपसी रक्तपात से बहुत दुःखी था। पर साथ ही उसने अपने सेनापति ग्रांट को सख्त आदेश दे रखा था कि वह कहीं जरा-सी भी सुस्ती या ढील न करे, क्योंकि दास प्रथा का उन्मूलन तथा गणराज्य की रक्षा इसी पर निर्भर थी कि विद्रोहियों को पूरी तरह हरा दिया जाए। आगे चलकर लिंकन की धारणा पूर्णतया सही सिद्ध हुई और इसी के परिणामस्वरूप अंत में जनमत बदलकर ऐसा वातावरण उत्पन्न हुआ, जिससे लिंकन को बहुत बड़े बहुमत से राष्ट्रपति चुन लिया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बलवेदी पर आत्मत्याग—

जब गृहयुद्ध में दास-प्रथा के पक्षपाती दक्षिणी राज्यों की लगभग पराजय हो चुकी थी तब लिंकन को दुबारा अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। पर इन चार वर्षों में युद्ध संचालन और गणराज्य की रक्षा में उसे इतनी अधिक शक्ति खर्च करनी पड़ी थी और इतनी चिंताओं में रहना पड़ा था कि वह बहुत निर्बल हो गया था और उसका वजन ४० पौंड घट गया था। पर इसकी तरफ ध्यान न देकर वह दास-प्रथा को मिटाने के संबंध में दक्षिण वालों से अंतिम और निर्णायक संघर्ष करता रहा। उसने ६ दिसंबर, १८६४ को अपने अंतिम वार्षिक संदेश में स्पष्ट कह दिया—"कोई भी व्यक्ति जो दासमुक्ति की घोषणा अथवा कांग्रेस के किसी भी कानून के अनुसार स्वतंत्र हो चुका है, उसे मेरे इस पद पर रहते हुए कदापि गुलाम नहीं बनाया जा सकेगा।"

४ मार्च, १८६४ को लिंकन ने दुबारा राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया। इसके एक महीने बाद दक्षिण की सेनाओं ने गणराज्य की सेनाओं के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दिया। इस विजय के उपलक्ष्य में वाशिंगटन में १४ अप्रेल को एक नाटक का अभिनय किया गया। लिंकन अपनी पत्नी सहित उसे देखने गया। वहीं पर दक्षिणी राज्य 'वरजीनियाँ' के एक षड्यंत्रकारी ने चोरी से लिंकन के पास पहुँचकर गोली मार दी। जिस कार्य को दक्षिण वाले खुले मैदान में नहीं कर सके, उसे उन्होंने इस प्रकार कपट का आश्रय लेकर पूरा किया। इस दुष्कृत्य के लिए समस्त संसार ने उसको धिक्कारा और इसके फलस्वरूप लिंकन का महत्त्व संसार भर में प्रकट हो गया। अब जबकि वह चल बसा, लोगों ने उसकी महानता को पूरी तरह अनुभव किया। सब लोग इस पर आश्चर्य करते थे कि एक बिना पढ़ा आदमी किस प्रकार इतना प्रभावशाली वक्ता और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बन सका। उसने अपने प्राण दे दिये, पर अपनी मृत्यु के द्वारा भी वह दक्षिणी और उत्तरी राज्यों के संघर्ष से उत्पन्न कटुता को कम करके, दासों की स्वाधीनता के घोषणा-पत्र पर एक ऐसी मुहर लगा गया, जिसे मिटा सकने में अभी तक कोई समर्थ नहीं हुआ।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org